Eklavya University
Damoh (M.P.)

Bachelor of Arts

(B.A. – III YEAR)

Jain and Prakrit Studies

Curriculum

(2023-2024)

NEP-2020

सैद्धांतिक प्रश्नपत्र जैन और प्राकृत अध्ययन के पाठ्यक्रम हेतु प्रारूप		
भाग अ – मेजर प्रश्न पत्र–1		
कार्यक्रम : स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम	कक्षा : बी.ए.	वर्ष : तृतीय वर्ष / सत्र : 2023–2024
विषय – जैन और प्राकृत अध्ययन		
1.	पाठ्यक्रम का कोड	EUA3 JAPR 1D
2.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	जैनदर्शन, व्याकरण और भाषा विज्ञान
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोर कोर्स / डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल / ...)	डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव (ग्रुप – ए) (पेपर 1) कोर कोर्स
4.	पूर्वापेक्षा (Pre-requisite) (यदि कोई हो)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए, छात्र ने विषय का अध्ययन डिप्लोमा में किया हो।
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) (CLO)	इस पाठ्यक्रम के सफल समापन पर, विद्यार्थी निम्न में सक्षम होंगे : 1. निष्काम कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करता है। 2. भारतीय संस्कृति में आत्मा के स्वरूप पर प्रकाश। 3. प्राचीन वर्णाश्रम की अवधारणा का अवबोध व वैशिष्ट्य। 4. प्राचीन गुरू शिष्य परम्परा का सम्यक् ज्ञान। 5. प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति से छात्रों को अवगत कराना। 6. अध्यात्म विद्या पर प्रकाश पड़ना। 7. छात्रों का भाषा विज्ञान के विविध आयामों से परिचित कराना। 8. भारतीय एवं अन्य भाषाओं के ज्ञान और परिष्कार में सहायक।
6.	क्रेडिट मान	06

आशीष पंत

Ashish

Mudh

7.	कुल अंक	अधिकतम अंक: 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक: 35

भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

व्याख्यान की कुल संख्या– ट्यूटोरियल– प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में) : L-T-P : 3 घंटे

इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या
प्रथम	**तत्त्वार्थ सूत्र** प्रथम अध्याय मात्र – पाठ्यांश की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न	18
द्वितीय	**समणसुत्तं ग्रन्थ और ग्रन्थकार** **समणसुत्तं का तत्त्वसूत्र (गाथा 588–623)** पाठ्यांश की व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न	18
तृतीय	**ज्ञान और प्रमाण का स्वरूप** **प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रमाण** सामान्य परिचय – (दोनों पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न)	18
चतुर्थ	**प्राकृत व्याकरण –** (अ) कृदन्त प्रत्यय (ब) तद्धित प्रत्यय (स) स्त्री प्रत्यय	18
पंचम	**भाषा विज्ञान का स्वरूप, महत्व तथा उपभाषा** भाषा विज्ञान की शाखाओं का परिचय – (अ) ध्वनि विज्ञान (ब) पद (रूप) विज्ञान (स) वाक्य विज्ञान (द) अर्थ विज्ञान (ई) प्रोक्ति विज्ञान	18

सार बिंदु (कीवर्ड) / टैग : तत्त्वार्थसूत्र, समणसुत्तं, प्राकृत व्याकरण – प्राकृत बोध, अभिनव प्राकृत व्याकरण, भाषा विज्ञान का स्वरूप, भाषा विज्ञान का महत्व तथा उपभाषा।

भाग स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन

पाठ्य पुस्तके, संदर्भ पुस्तकें, अन्य संसाधन

अनुशंसित सहायक पुस्तकें / ग्रन्थ / अन्य पाठ्य संसाधन / पाठ्य सामग्रीः

1. प्राकृत बोध – आचार्य सुनीलसागर जी महाराज, प्रकाशन – जैन संस्कृति शोध संस्थान, इन्दौर, 2009।
2. प्राकृत वाक्य रचना बोध – युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं।
3. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र– कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1997
4. भाषाविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद, संस्करण : 1969

5. प्राकृत दीपिका–प्रो. सुदर्शन लाल जैन, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।
6. अभिनव प्राकृत व्याकरण, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, धर्मोदय विद्यापीठ, सागर, 2016
7. प्राकृत मार्गोपदेशिका – पं. बेचरदास जीवराज दोशी, मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली, 1968
8. प्राकृत प्रबोध – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1965 भाषा विज्ञान की भूमिका – डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा
9. तत्त्वार्थसूत्र – सम्पादक – पं. फूलचन्द्र सिद्धांत शास्त्री, प्रकाशन – श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन शोध संस्थान, नरिया, वाराणसी
10. तत्त्वार्थसूत्र – व्याख्याकार आचार्य सुनीलसागर, जैन संस्कृति शोध संस्थान, इन्दौर, 2009।
11. समणसुत्तं, सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।
12. ज्ञान मीमांसा – साध्वी श्रुतयशा, प्रकाशन – जैन विश्व भारती, लाडनूं, संस्करण – 1999।

अनुशंसित समकक्ष ऑनलाइन पाठ्यक्रम :

भाग द – आंकलन एवं मूल्यांकन

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियां :

अधिकतम अंक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक : 30

विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंक: 70

आतंरिक मूल्यांकन सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE)	कक्षा परीक्षण / असाइनमेंट / प्रस्तुतीकरण (प्रजेन्टेशन)	30
बाह्य आकलन : विश्वविद्यालय परीक्षा : समय – 03.00 घंटे	अनुभाग (अ) : अति लघु प्रश्न अनुभाग (ब) : लघु प्रश्न अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	70

कोई टिप्पणी / सुझाव :

आशीष जैन

Ashish

सैद्धांतिक प्रश्नपत्र जैन और प्राकृत अध्ययन के पाठ्यक्रम हेतु प्रारूप

भाग अ – मेजर प्रश्न पत्र–2			
कार्यक्रम : स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम	कक्षा : बी.ए.	वर्ष : तृतीय वर्ष	सत्र : 2023–2024
विषय – जैन और प्राकृत अध्ययन			

1.	पाठ्यक्रम का कोड	EUA3-JAPR-2D	
2.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	काव्य, छंद एवं अलंकार	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोर कोर्स / डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल / ...)	डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव (ग्रुप – ए) (पेपर 2)	
4.	पूर्वापेक्षा (Pre-requisite) (यदि कोई हो)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए, छात्र ने विषय का अध्ययन डिप्लोमा में किया हो।	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) (CLO)	इस पाठ्यक्रम के सफल समापन पर, विद्यार्थी निम्न में सक्षम होंगे : 1. प्राचीन समाजिक व्यवस्था एवं आदर्श जीवन के ज्ञान में सहायक। 2. आदर्श दाम्पत्य जीवन की प्रेरणा। 3. नाट्यकला एवं चित्रकला का अवबोध। 4. करुण रस के परिपाक की चरम अनुभूति कराने में सहायक। 5. भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का अभिवर्धन एवं पात्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रण कराने में समर्थ। 6. भारतीय जीवन पद्धति के विविध पक्षों पर प्रकाश एवं राष्ट्रप्रेम की अवधारणा का पोषक। 7. आधुनिक प्राकृत कवि परम्परा से छात्र परिचित होंगे। 8. नई पीढ़ी के लिए काव्य सर्जना में सहायक।	
6.	क्रेडिट मान	06	
7.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अंकः 35

आशीर्वाद Ashish

भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु		
व्याख्यान की कुल संख्या– ट्यूटोरियल– प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में): **L-T-P : 3 घंटे**		
इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या
प्रथम	काव्य का उद्भव एवं विकास और महत्व काव्यों की समाज में उपयोगिता	18
द्वितीय	कुमारपाल चरित (प्रथम सर्ग) पाठ्यांश से व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	18
तृतीय	नवस्पन्द (अ) कवि परिचय 1. आचार्य सुनीलसागर 2. आचार्य वसुनन्दी 3. आचार्य विरागसागर 4. आचार्य विनम्रसागर 5. आचार्य विमर्शसागर 6. मुनि प्रणम्यसागर 7. मुनि श्री आदित्यसागर 8. आचार्य चन्दन मुनि 9. मुनिविमलकुमार 10. डॉ. उदयचन्द जैन। (ब) रचना परिचय 1. भावणासारो, वयणसारो 2. विज्जावसुसावययारो 3. प्राकृत भक्ति संग्रह 4. चौतीस स्थान 5. अप्पोदया 6. तित्थयर भावणा 7. इष्टोपदेश भाष्य 8. रयणवाल कहा 9. पाइयसंगहो 10. सम्मदि–सम्भवो।	18
चतुर्थ	प्राकृत काव्य की विविध विधाएँ – महाकाव्य, चरित काव्य, मुक्तक काव्य, कथा साहित्य तथा चम्पूकाव्य।	18
पंचम	छन्द एवं अलंकार अ. छन्द – गाथा एवं उसके भेद, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ, वसंततिलका, मंदाक्रांता। ब – अलंकार – अनुप्रास, यमक, श्लेश, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, विभावना, विशेषोक्ति।	18
सार बिंदु (कीवर्ड)/टैग : कुमारपाल चरित्र, प्राकृत पैंगल, अलंकार दप्पण, नवस्पन्द, प्राकृत काव्य की विविध विधाएँ, छन्द एवं अलंकार।		
भाग स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन		
पाठ्य पुस्तके, संदर्भ पुस्तकें, अन्य संसाधन		
अनुशंसित सहायक पुस्तकें/ग्रन्थ/अन्य पाठ्य संसाधन/पाठ्य सामग्री : – 1. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी, 2014 2. प्राकृत साहित्य का इतिहास– डॉ. जगदीशचंद्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961।		

आशीष जैन

Ashish

3. कुमारपाल चरित – आचार्य हेमचन्द्र, सं. डॉ. पी. एल. वैद्य, भण्डारकर ओयिण्टल इन्स्टीट्यूट, पूना। संस्करण – 1936
4. छन्दोमंजरी (हिन्दी) – व्याख्याकार परमेश्वरी पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 2007।
5. प्राकृत पैंगलम् – सं. डॉ. भोलाशकर व्यास, प्र. प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी तथा द एशियाटिक सोसायटी ऑव बंगाल, कलकत्ता, संस्करण – 1902।
6. अलंकार सर्वस्व – संजीवनी, रामचन्द्र द्विवेद मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2012–13।
7. अलंकार प्रकाश – जयन्त मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2012–13।
8. छन्दोविंशतिका – रामचंद्र झा, चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
9. बीसवी शताब्दी से रचित प्राकृत वाङ्मय का दार्शनिक अनुशीलन – डॉ. आशीष कुमार जैन, (अप्रकाशित शोध प्रबंध)।
10. सुनील प्राकृत समग्र : रचनाकार आचार्य सुनीलसागर जी महाराज, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, संस्करण : 2016।
11. तित्थयर भावणा : रचनाकार मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज, सम्पादक : प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (बिहार)।
12. पाइय संगहो, रचनाकार मुनि विमलकुमार, प्रकाशन : जैन विश्व भारती लाडनूँ, संस्करण : 2015।
13. इट्ठोवएस–भासो, अनुवादक : मुनि आदित्यसागर जी महाराज, प्रकाशन : श्रमण संस्कृति सेवा संघ, इन्दौर, संस्करण : 2016।
14. आचार्य सुनीलसागर जी महाराज एवं उनकी प्राकृत कृतियों का परिचय : डॉ. आशीषकुमार जैन, आचार्य आदिसागर अंकलीकर, अन्तर्राष्ट्रीय मंच मुंबई, 2019।

अनुशंसित समकक्ष ऑनलाइन पाठ्यक्रम :

भाग द – आंकलन एवं मूल्यांकन

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियां :

अधिकतम अंक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक : 30

विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंकः 70

आतंरिक मूल्यांकन सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE)	कक्षा परीक्षण / असाइमेंट / प्रस्तुतीकरण (प्रजेन्टेशन)	30
बाह्य आकलन : विश्वविद्यालय परीक्षा : समय – 03.00 घंटे	अनुभाग (अ) : अति लघु प्रश्न अनुभाग (ब) : लघु प्रश्न अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	70

कोई टिप्पणी / सुझाव :

Ashish आशीष जैन Mahi

सैद्धांतिक प्रश्नपत्र जैन और प्राकृत अध्ययन के पाठ्यक्रम हेतु प्रारूप
वैकल्पिक (अथवा)

<table>
<tr><td colspan="4">भाग अ – मेजर प्रश्न पत्र – 1</td></tr>
<tr><td>कार्यक्रम : स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम</td><td>कक्षा : बी.ए.</td><td>वर्ष : तृतीय वर्ष</td><td>सत्र : 2023–2024</td></tr>
<tr><td colspan="4">विषय – जैन और प्राकृत अध्ययन</td></tr>
</table>

1.	पाठ्यक्रम का कोड	EUA3 JAPR 3D
2.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	प्राकृत का कथा साहित्य
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोर कोर्स / डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल / ...)	डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव (ग्रुप – ए) (पेपर 1)
4.	पूर्वापेक्षा (Pre-requisite) (यदि कोई हो)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए, छात्र ने विषय का अध्ययन डिप्लोमा में किया हो।
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) **(CLO)**	इस पाठ्यक्रम के सफल समापन पर, विद्यार्थी निम्न में सक्षम होंगे : 1. प्राचीन कथा की चिंतन परम्परा से छात्रों को परिचित कराना। 2. काव्य सर्जन हेतु कथा साहित्य से मौलिक विचारों का ज्ञान कराकर छात्रों में अभिरुचि जागृत करना। 3. प्राकृत कथा साहित्य की विविध चिंतन परम्पराओं से छात्रों को अवगत कराना। 4. छात्रों को कथाओं का समग्र बोध कराना। 5. कथा की सार्वजनीन और सार्वकालिक महिमा को रेखांकित करना। 6. छात्रों में कल्पनाशक्ति का विकास एवं कथा सौंदर्य का बोध कराना।
6.	क्रेडिट मान	06

आशीषजैन Ashish Nbelh

7.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक : 35

भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

व्याख्यान की कुल संख्या– ट्यूटोरियल– प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में): L-T-P : 3 घंटे

इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या
प्रथम	कथा का उद्भव एवं विकास कथा का महत्व और लाभ। समाज में कथा की उपयोगिता। कथा का स्वरूप एवं कथा के प्रकार।	18
द्वितीय	प्राकृत कथा साहित्य एवं आचार्य हरिभद्र सूरि।	18
तृतीय	समराइच्चकहा (प्रथम भव)। पाठ्यांश से व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न।	18
चतुर्थ	वसुदेव हिण्डी का परिचय। कोऊहल कवि और उनकी लीलावई कहा।	18
पंचम	आधुनिक प्राकृत कथाएँ और कथाकार – बाहुबलि – आचार्य सुनीलसागर धम्मकहा – प्रणम्यसागर पाइयकहा – कंचनकुमारी साध्वी	18

सार बिंदु (कीवर्ड)/टैग : प्रमुख कथा साहित्य का परिचय, प्राकृत कथा का स्वरूप एवं भेद, प्रमुख प्राकृत कथा साहित्य का परिचय, आधुनिक प्राकृत कथा साहित्य का परिचय।

भाग स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन

पाठ्य पुस्तके, संदर्भ पुस्तकें, अन्य संसाधन

अनुशंसित सहायक पुस्तकें/ग्रन्थ/अन्य पाठ्य संसाधन/पाठ्य सामग्री :

1. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी, 2014।
2. प्राकृत साहित्य का इतिहास– डॉ. जगदीशचंद्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961।
3. प्राकृत भाषा और साहित्य– प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली बिहार।
4. बीसवीं शताब्दी से रचित प्राकृत वाङ्मय का दार्शनिक अनुशीलन – डॉ. आशीष कुमार जैन, (अप्रकाशित शोध प्रबंध)
5. प्राकृत कथा साहित्य – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, अहमदाबाद।
6. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (बिहार)।

Ashish आशीष जैन

7. समराइच्चकहा – आचार्य हरिभद्रसूरि, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली। 8. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां – डॉ. जगदीचन्द्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।		
अनुशंसित समकक्ष ऑनलाइन पाठ्यक्रम :		
भाग द – आंकलन एवं मूल्यांकन		
अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियां : अधिकतम अंक : 100 सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक : 30 विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंक: 70		
आतंरिक मूल्यांकन सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE)	कक्षा परीक्षण / असाइमेंट / प्रस्तुतीकरण (प्रजेन्टेशन)	30
बाह्य आकलन : विश्वविद्यालय परीक्षा : समय – 03.00 घंटे	अनुभाग (अ) : अति लघु प्रश्न अनुभाग (ब) : लघु प्रश्न अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	70
कोई टिप्पणी / सुझाव :		

Ashish आशीष जैन MdW

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञानप्राप्तये लक्ष्यसन्धानम्

सैद्धांतिक प्रश्नपत्र संस्कृत के पाठ्यक्रम हेतु प्रारूप

भाग अ – मेजर प्रश्न पत्र–2

कार्यक्रम : स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम	कक्षा : बी.ए.	वर्ष : तृतीय वर्ष	सत्र : 2023–2024

विषय – जैन और प्राकृत अध्ययन

1.	पाठ्यक्रम का कोड	EUA3-JAPR-4D	
2.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	सट्टक साहित्य	
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोर कोर्स / डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल / ...)	डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव (ग्रुप – ब) (पेपर 2)	
4.	पूर्वापेक्षा (Pre-requisite) (यदि कोई हो)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए, छात्र ने विषय का अध्ययन डिप्लोमा में किया हो।	
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) **(CLO)**	इस पाठ्यक्रम के सफल समापन पर, विद्यार्थी निम्न में सक्षम होंगे : 1. छात्र सट्टक विधा और सट्टकों में उपलब्ध नाट्यतत्वों से परिचित हो सकेंगे। 2. रूपक एवं सट्टक की विषय वस्तु के अवबोध तथा चयन में सहायक। 3. छात्रों में संवाद योजना एवं कथोपकथन की कला का विकास। 4. विविध पात्रों के स्वरूप एवं विशेषताओं का ज्ञान कराना। 5. अभिव्यक्ति कौशल का विकास। 6. विविध नाट्यरसों के ज्ञान में सहायक। 7. अभिनय क्षेत्र एवं रंगमंचीय कला कौशल का विकास।	
6.	क्रेडिट मान	06	
7.	कुल अंक	अधिकतम अंक:30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक:35

Ashish आशीष जैन MdW

भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

व्याख्यान की कुल संख्या– ट्यूटोरियल– प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में): L-T-P : 3 घंटे

इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या
प्रथम	सट्टक का उद्भव और विकास सट्टक का महत्व और सट्टक की आवश्यकता तथा विशेषताएँ ।	18
द्वितीय	कर्पूरमंजरी – 1 जवनिका	18
तृतीय	कर्पूरमंजरी – 2 जवनिका	18
चतुर्थ	रंभामजरी – प्रथम जवनिका	18
पंचम	प्रमुख सट्टककार – राजशेखर, रुद्रदास, विश्वेश्वर, धनश्याम और नयचन्द्र। नोट – जैन और प्राकृत का द्वितीय वर्ष में मेजर और माईनर (पूर्वापेक्षा) प्रश्न पत्रों के रूप में अध्ययन किया गया हैं।	18

सार बिंदु (कीवर्ड)/टैग : सट्टक का स्वरूप एवं भेद, आवश्यकता तथा महत्व, कथावस्तु , पात्रयोजना, रसयोजना, रूपक प्रयोग, सट्टक मंचन।

भाग स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन

पाठ्य पुस्तके, संदर्भ पुस्तकें, अन्य संसाधन

अनुशंसित सहायक पुस्तकें / ग्रन्थ / अन्य पाठ्य संसाधन / पाठ्य सामग्रीः

1. कर्पूरमंजरी– श्री रामकुमार आचार्य, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 2012
2. इन्ट्रोडक्सन टू कर्पूरमंजरी : डॉ. आर. पी. पोद्दार, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (विहार)
3. प्राकृत प्रवेशिका – डॉ. कोमलचन्द्र जैन, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
4. प्राकृत साहित्य का इतिहास : डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
5. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
6. रंभामंजरी –डॉ. आर. पी. पोद्दार, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (बिहार)
7. प्राकृत भाषा और साहित्य– प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली बिहार।

अनुशंसित समकक्ष ऑनलाइन पाठ्यक्रम :

भाग द – आंकलन एवं मूल्यांकन

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियां :

अधिकतम अंक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक : 30

Ashish आशीष जैन

विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंकः 70		
आतंरिक मूल्यांकन सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE)	कक्षा परीक्षण / असाइमेंट / प्रस्तुतीकरण (प्रजेन्टेशन)	30
बाह्य आकलन : विश्वविद्यालय परीक्षा : समय – 03.00 घंटे	अनुभाग (अ) : अति लघु प्रश्न अनुभाग (ब) : लघु प्रश्न अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	70
कोई टिप्पणी / सुझाव :		

Ashish

M.dw

सैद्धांतिक प्रश्नपत्र संस्कृत के पाठ्यक्रम हेतु प्रारूप

भाग अ – माईनर, प्रश्न पत्र–2				
कार्यक्रम : स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम		कक्षा : बी.ए.	वर्ष : तृतीय वर्ष	सत्र : 2022–2023
विषय – जैन और प्राकृत अध्ययन				
1.	पाठ्यक्रम का कोड	EUA3-JAPR 2T		
2.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	प्राकृत खण्ड काव्य		
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोर कोर्स / डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल / ...)	डिसिप्लिन स्पेसिफिक इलेक्टिव (ग्रुप – ब) (पेपर 2)		
4.	पूर्वापेक्षा (Pre-requisite) (यदि कोई हो)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए, छात्र ने विषय का अध्ययन डिप्लोमा में किया हो।		
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) (CLO)	इस पाठ्यक्रम के सफल समापन पर, विद्यार्थी निम्न में सक्षम होंगे : 1. खण्डकाव्य विधा का अवबोध कराना। 2. संदेश और दौत्य प्रेषण की कला का विकास। 3. भारत के सांस्कृतिक इतिहास से छात्रों को अवगत कराना। 4. छात्रों में कल्पना शक्ति और रचनाधर्मिता का विकास। 5. प्रेमतत्व और सौन्दर्य की उत्कृष्टता का बोध। 6. प्राकृत कवियों की रसाभिव्यंजना से परिचित कराना। 7. प्रकृतिस्वरूप की विविधता का बोध।		
6.	क्रेडिट मान	06		
7.	कुल अंक	अधिकतम अंक: 30+70	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक: 35	
भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु				

Ashish आशीषपंत Nidhi

व्याख्यान की कुल संख्या– ट्यूटोरियल– प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में): **L-T-P : 3 घंटे**		
इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या
प्रथम	खण्ड काव्य का उद्भव, विकास तथा लक्षण। प्राकृत के प्रमुख खण्ड काव्यों का सामान्य परिचय।	18
द्वितीय	कंसवहो, प्रथम सर्ग। व्याख्या एवं सम्पूर्ण कंसवहो पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न।	18
तृतीय	कंसवहो, द्वितीय सर्ग। व्याख्या तथा सम्पूर्ण रचना पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न	18
चतुर्थ	उसाणिरुद्धं, प्रथम सर्ग। व्याख्या एवं समस्त रचना पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न।	18
पंचम	उपर्युक्त खण्डकाव्यकार का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व।	18

सार बिंदु (कीवर्ड)/टैग : खण्ड काव्य का विकासक्रम और लक्षण एवं प्रमुख खण्ड काव्यों का परिचय, कंसवहो, उसाणिरुद्धं, रचनाकार का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व।

भाग स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन

पाठ्य पुस्तके, संदर्भ पुस्तकें, अन्य संसाधन

अनुशंसित सहायक पुस्तकें/ग्रन्थ/अन्य पाठ्य संसाधन/पाठ्य सामग्री :

1. कंसवहो–रामपाणिवाद, डॉ. आर. पी. पोद्दार, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (विहार)

2. उसाणिरुद्धं–रामपाणिवाद, डॉ. आर. पी. पोद्दार, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (विहार)

3. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी, 2014।

4. प्राकृत साहित्य का इतिहास– डॉ. जगदीशचंद्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961।

5. प्राकृत भाषा और साहित्य– प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली बिहार।

6. प्राकृत साहित्य की रूप–रेखा – डॉ. तारा डाग, प्रकाशन – प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर।

अनुशंसित समकक्ष ऑनलाइन पाठ्यक्रम :

भाग द – आंकलन एवं मूल्यांकन

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियां : अधिकतम अंक : 100 सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक : 30 विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंकः 70		
आतंरिक मूल्यांकन सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE)	कक्षा परीक्षण / असाइमेंट / प्रस्तुतीकरण (प्रजेन्टेशन)	30
बाह्य आंकलन : विश्वविद्यालय परीक्षा : समय – 03.00 घंटे	अनुभाग (अ) : अति लघु प्रश्न अनुभाग (ब) : लघु प्रश्न अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	70
कोई टिप्पणी / सुझाव :		